INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS
VOLUME 4, ISSUE 3, MARCH 2016 ISSN: 2320-2882(ONLINE)
ORIGINAL ARTICLE
Impact Factor: 0.345(GIF)
www.ijcrt.net

# माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विभिन्न वर्गों की बालिकाओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन

**राजेन्द्र प्रसाद**
*शोध छात्र, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि. रीवा म.प्र.*

*सृष्टिकर्ता ने इस ब्रहमाण्ड में प्रत्येक सजीव व निर्जीव की उत्पत्ति की है, जो कि अपने आप में श्रेष्ठ एवं उत्तम है जिसमें कोई भी एक वस्तु दूसरे से पूर्णतः भिन्न है चूंकि निर्माणकर्ता ने सभी जीवों में श्रेष्ठ एवं उत्तम कृति के रूप में मानव को निर्मित किया है जोकि यथार्थ पूर्ण चिंतन, तार्किक विवेचन तथा आवश्यकतानुरूप उन समस्त भौतिक अभौतिक वस्तुओं के स्वरूप में परिवर्तन और परिमार्जन भी कर सकता है । यही कारण है कि अन्य सजीवों में मनुष्य विवेकपूर्ण निर्णय लेने में सक्षम है ।*

विभिन्न भौतिकता की प्राप्ति के लिये मानव नित नई चीजों का आविष्कार करता है और क्षणिक संतुष्टिता प्राप्त करता है। आविष्कार उद्देश्य केन्द्रित तथा लक्ष्योन्मुख होते हैं । सभी अपनी–अपनी प्रज्ञा (बुद्धि) के अनुसार कार्य में सफलता अर्जित करने का प्रयास करते हैं प्रत्येक व्यक्ति में लक्ष्य प्राप्ति की अभिलाषा भिन्न–भिन्न होती है यह विभाजन हम महिला–पुरूष, बालक–बालिका तथा युवाओं एवं वृद्धों में कर सकते हैं । निश्चय ही हमारे देश में महिलाओं का स्थान पूजनीय एवं माता स्वरूप है यदि हम इनके स्तर को प्रगति के मार्ग पर प्रशस्त करना चाहते है तो इनकी देखभाल बचपन से ही अर्थात विद्यालयी शिक्षा से होनी चाहिये, क्योंकि प्रत्येक में विभिन्न क्षेत्रों के कार्य करने की अभिलाषा, इच्छा, महत्वाकांक्षा या फिर जिज्ञासा भिन्न–भिन्न हो सकती है । इन्हीं कारणों के द्वारा लक्ष्यों या उद्देश्यों का निर्धारण किया जाता है और फिर उन्हें प्राप्त करने का यथासंभव प्रयास किया जाता है। इस तथाकथित परिपेक्ष्य में समग्र को उन्नति एवं प्रगतिशील स्वरूप प्रदान करने के लिये हमें अपनी बालिकाओं की इच्छाओं, आकांक्षाओं का ध्यान देना होगा, बिना इन कारकों के बालिकाओं ही नहीं अपतु मानव समग्र प्रगति के पथ पर अग्रसर नहीं हो सकेगा।

**समस्या में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण**

1– **माध्यमिक स्तर–** प्रारंभिक शिक्षा पूर्ण करने के पश्चात और उच्च माध्यमिक स्तर के पूर्व जिसमें कक्षा नवीं व दसवीं की शिक्षा प्रदान की जाती है उसे ही माध्यमिक स्तर कहते हैं ।

2– **वर्ग–** शोधकर्ता के शोध प्रकरण में कक्षा नौ व दस में अध्ययनरत सामान्य जाति, अन्य पिछड़ी जाति और अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति की बालिकाओं को ही वर्ग की मान्यता प्रदान की गयी है।

3– **बालिकायें–** शोध अध्ययन में वे छात्राऐं जो माध्यमिक स्तर की शिक्षा ग्रहण
कर रही हैं, परंतु माध्यमिक स्तर को उत्तीर्ण नहीं किया है वे ही शोध अध्ययन के न्यादर्श के रूप में चयनित बालिकायें हैं ।

4– **आकांक्षा स्तर–** किसी लक्ष्य या मूल्य आदि की प्राप्ति की इच्छा आकांक्षा कहलाती है, दूसरे शब्दों में व्यक्ति में उन्नति करने की या अपने स्तर को ऊंचा उठाने की इच्छा ही आकांक्षा कहलाती है, आकांक्षा ही यह निश्चित करती है कि व्यक्ति क्या करना चाहता है अथवा उसका लक्ष्य क्या है । आकांक्षा स्तर उस सीमा को निर्धारित करती है जिस सीमा तक एक व्यक्ति अपने जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करना चाहता है जब कोई व्यक्ति एक कार्य कर रहा होता है तो वह अपने लिये एक नया स्तर बना लेता है जिसे वह पाना चाहता है इसे ही आकांक्षा स्तर कहते हैं । यदि व्यक्ति सफलता प्राप्त कर लेता है तो यह स्तर ऊँचा हो जाता है परंतु असफल होने पर व्यक्ति इसे नीचा कर देता है।

**अध्ययन के उद्देश्य**

1–माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सामान्य वर्ग की बालिकाओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर का अध्ययन करना ।
2–माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अन्य पिछड़ा वर्ग की बालिकाओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर का अध्ययन करना ।

Please cite this Article as: **राजेन्द्र प्रसाद, माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विभिन्न वर्गों की बालिकाओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन**
International Journal of Creative Research Thoughts, Volume 3, Issue 4, April 2015.

3–माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति वर्ग की बालिकाओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर का अध्ययन करना ।
4–माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सामान्य वर्ग तथा अन्य पिछड़ा वर्ग की बालिकाआं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना ।
5–माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सामान्य वर्ग तथा अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग की बालिकाओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।
6–माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अन्य पिछड़ा वर्ग तथा अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग की बालिकाओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना ।
7–माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सामान्य वर्ग तथा अन्य पिछड़ा वर्ग एवं अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति वर्ग की बालिकाओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना ।

**प्रस्तुत अध्ययन की शोध परिकल्पनाऐं–**:

1–माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सामान्य वर्ग तथा अन्य पिछड़ा वर्ग की बालिकाओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2–माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सामान्य वर्ग तथा अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग की बालिकाओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है ।
3–माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अन्य पिछड़ा वर्ग तथा अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग की बालिकाओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
4–माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सामान्य वर्ग तथा अन्य पिछड़ा वर्ग, अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के संयुक्त वर्ग की बालिकाओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

**अध्ययन की परिसीमाएँ**

प्रत्येक शोधकार्य की कोई न कोई निश्चित सीमा होती है जिससे कि शोधकार्य नियंत्रित किया जा सके । प्रस्तुत लघुशोध कार्य को इन सीमाओं के कारण ही विस्तृत रूप नहीं प्रदान किया जा सका है। प्रस्तुत शोध अध्ययन का सीमांकन निम्न प्रकार से किया गया है ।

- शोधकर्ता द्वारा शोध अध्ययन के लिये उत्तर प्रदेश राज्य के जनपद रायबरेली का चयन किया गया है ।
- जनपद रायबरेली के केवल माध्यमिक स्तर के विद्यालयों का चयन किया गया है।
- माध्यमिक स्तर के विद्यालयों की केवल बालिकाओं को ही समष्टि के रूप में चुना गया है ।
- शोधकर्ता के द्वारा माध्यमिक स्तर के पांच विद्यालयों को न्यादर्श के रूप में लिया गया है।

**शोध विधि**

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता ने अपने शोध में वर्णनात्मक अनुसंधान विधि के अंतर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है।

**अध्ययन का न्यादर्श**

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता ने समष्टि से प्रतिदर्शन की इकाईयों में से संभाव्य न्यादर्श विधि का प्रयोग करते हुये यादृच्छिक प्रतिचयन विधि की लाटरी विधि का प्रयोग कर जनपद रायबरेली कें माध्यमिक विद्यालयों में से पांच विद्यालयों का चयन किया है ।

**अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण**

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता ने शैक्षिक आकांक्षा स्तर के मापन के लिये **डॉ0 वी0पी0 शर्मा एवं डॉ0 अनुराधा गुप्ता द्वारा निर्मित ''शैक्षिक आकांक्षा स्तर मापनी''** का उपयोग किया है । यह मापनी **(1050)** विद्यार्थियों पर प्रमापीकृत की गयी है इस मापनी में **(45)** पद है जिनका उत्तर प्रयोज्य सही का चिन्ह लगाकर देता है। प्रत्येक पद में दो कथन है **'अ'** और **'ब'** । इन दोनों में से किसी एक को ही उत्तर मानकर चिन्ह लगाना होता है इस मापनी को हल करने के लिये यद्यपि समय सीमा का प्रावधान नहीं है फिर भी अधिकतम 25
मिनट का समय सुनिश्चित किया गया है। इसमें प्रत्येक सही उत्तर के लिये एक अंक व गलत उत्तर के लिये शून्य अंक प्रदान किया जाता है, जिसके आधार पर प्रत्येक प्रयोज्य के आकांक्षा स्तर का पता लगाया जाता है ।

**सारणी नं0–1**

**विश्वसनीयता** (Reliability )

a- Coefficient of stability by Test-Retest method. $r_{tt}$=.98

b- Coefficient of Internal consistency by odd-even technique using S-B formula.....$r_{tt}$=.803

**सारणी नं0–2**

**वैधता** (Validity)

a- Aainst scholastic Achievement (Board Exam.) r=.692

b- Predictive validity with EAS, Form V.....r=.596

**परिकल्पनाओं का सत्यापन**

**परिकल्पना नं0 1–**

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सामान्य वर्ग तथा अन्य पिछड़ा वर्ग की बालिकाओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

## सारणी नं0–1

| क0 सं0 | समूह की संख्या N | मध्यमान M | मानक विचलन SD | मध्यमानों के बीच अंतर M1 - M2 | मानक त्रुटि SED | क्रान्तिक अनुपात CR | सार्थकता स्तर | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | 0.01 पर | 0.05 पर |
| 1 | 46 | 24.67 | 4.43 | 0.64 | 0.96 | 0.67 | असार्थक | असार्थक |
| 2 | 68 | 24.03 | 5.85 | | | | | |

उपरोक्त क्रान्तिक अनुपात तालिका से स्पष्V gS fd सामान्य वर्ग की बालिकाओं का मध्यमान तथा मानक विचलन क्रमशः 24.67 तथा 4.43 प्राप्त हुआ है तथा अन्य पिछड़ा वर्ग की बालिकाओं का मध्यमान तथा मानक विचलन क्रमशः 24.03 व 5.85 प्राप्त हुआ है । दोनों समूहों के मध्यमानों के बीच अंतर 0.64 प्राप्त हुआ, इसी प्रकार दोनों समूहों से मानक त्रुटि 0.96 प्राप्त हुई । इस प्रकार क्रान्तिक अनुपात का मान 0.67 प्राप्त हुआ । क्रान्तिक अनुपात का मान्य 1.96 से कम है अतः 0.05 स्तर मान पर असार्थक है । इस प्रकार आंकड़ों के विश्लेषणोपरांत यह स्पष्ट हो जाता है कि शून्य परिकल्पना को स्वीकृत करते हुये शोध परिकल्पना को निरस्त किया जाता है कारण स्पष्ट है कि अकांक्षा स्तर सभी बालिकाओं में समान रूप से विकसित हो रही है, क्योकि सभी बालिकाऐं एक ही तरह के परिवेश में मध्यम वर्गीय जीवनयापन करती हैं तथा एक ही तरह के विद्यालयों में शिक्षा ग्रहण कर रही है जिससे कि उनके उददेश्यों की प्राप्ति की महत्वाकांक्षाऐं कार्य करने की शैली, पारिवारिक परिवेश एक जैसा होने के कारण उनकी सोचने विचार, मार्गदर्शन आदि में सामानता प्रतीत होती है, जिस कारण से इनके आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है ।

**परिकल्पना नं0 2–:**

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सामान्य वर्ग तथा अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग की बालिकाओं के शैक्षिक अकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं ।

**सारणी नं0–2**

| क्र0 सं0 | समूह की संख्या N | मध्य मान M | मानक विचलन SD | मध्य मानों के बीच अंतर $M_1$-$M_2$ | मानक त्रुटि SED | क्रान्तिक अनुपात CR | सार्थकता स्तर | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | 0.01 पर | 0.05 पर |
| 1 | 46 | 24.67 | 4.43 | 1.59 | 1.22 | 1.30 | असार्थक | असार्थक |
| 2 | 36 | 23.08 | 6.21 | | | | | |

सारणी से प्राप्त आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सामान्य वर्ग तथा अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग की बालिकाओं के शैक्षिक अकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं । सामान्य वर्ग की बालिकाओं का मध्यमान तथा मानक विचलन क्रमशः 24.67 तथा 4.43 प्राप्त हुआ है तथा अनुसूचित जाति एवं अनसूचित जनजाति वर्ग की बालिकाओं का मध्यमान तथा मानक विचलन क्रमशः 23.08 व 6.21 प्राप्त हुआ है, इसी प्रकार दोनों समूहों के मध्यमानों के बीच अन्तर 1.59 और दोनों समूहों के बीच मानक त्रुटि 1.22 तथा क्रान्तिक अनुपात 1.30 प्राप्त हुआ है, क्योंकि क्रान्तिक अनुपात का मान 1.96 से कम है इसलिये 0.05 के स्तर के मान पर असार्थक है । इस प्रकार से आंकड़ा विश्लेषण के आधार पर शून्य परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है और शोध परिकल्पना निरस्त की जाती है।

## परिकल्पना नं0 3:–

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अन्य पिछड़ा वर्ग तथा अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग की बालिकाओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

**सारणी नं0–3**

| क्र0 सं0 | समूह की संख्या N | मध्य मान M | मानक विचलन SD | मध्य मानों के बीच अंतर $M_1$-$M_2$ | मानक त्रुटि SED | क्रान्तिक अनुपात CR | सार्थकता स्तर | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | 0.01 पर | 0.05 पर |
| 1 | 68 | 24. | 5. | | | | | |

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | 03 | 85 | 0.95 | 1.<br>25 | 0.76 | असा<br>र्थक | असा<br>र्थक |
| 2 | 36 | 23.<br>08 | 6.<br>21 | | | | | |

सारणी के विश्लेषित आंकड़ों से प्राप्त माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अन्य पिछड़ा वर्ग तथा अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग की बालिकाओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं अन्य पिछड़ा वर्ग की बालिकाओं का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 24.03 व 5.85 है जबकि अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग की बालिकाओं का मध्यमान तथा मानक विचलन क्रमशः 23.08 व 6.21 है । दोनों समूहों के मध्यमानों का अन्तर 0.95 तथा मानक त्रुटि 1.25 है जिसके आधार पर क्रान्तिक अनुपात 0.76 प्राप्त हुआ है जोकि 0.05 स्तर के मान 1.96 से कम है इसलिये शोध परिकल्पना को निरस्त कर शून्य परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है।

**परिकल्पना नं0 4:–**

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सामान्य वर्ग तथा अन्य पिछड़ा वर्ग, अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग की बालिकाओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

**सारणी नं0–4**

| क्र<br>0<br>सं<br>0 | स<br>मू<br>ह<br>क<br>ी<br>सं<br>ख<br>या<br>N | मध्<br>यमा<br>न<br>M | मा<br>न<br>क<br>वि<br>च<br>ल<br>न<br>S<br>D | मध्य<br>मानों<br>के<br>बीच<br>अंतर<br>$M_1$-<br>$M_2$ | मा<br>न<br>क<br>त्रुि<br>ट<br>S<br>E<br>D | क्रान्ि<br>त<br>क<br>अनु<br>पात<br>CR | सार्थकता स्तर | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | 0.<br>0<br>1<br>प<br>र | 0.<br>0<br>5<br>प<br>र |
| 1 | 4<br>6 | 24.<br>67 | 4.<br>43 | 0.97 | 0.<br>8<br>7 | 1.<br>11 | अ<br>सा<br>र्थ<br>क | अ<br>सा<br>र्थ<br>क |
| 2 | 1<br>0<br>4 | 23.<br>70 | 5.<br>85 | | | | | |

उक्त सारणी के आंकड़ों के विश्लेषण में पाया गया कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सामान्य वर्ग तथा अन्य पिछड़ा वर्ग, अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग की बालिकाओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। सामान्य वर्ग की बालिकाओं का मध्यमान 24.67 और मानक विचलन 4.43 है साथ ही अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति व अन्य पिछड़ा वर्ग की बालिकाओं का मध्यमान 23.70 तथा मानक विचलन 5.85 है। इन दोनों समूहों के प्राप्त मध्यमानों का अंतर 0.97 और मानक त्रुटि 0.87 पायी गयी । अतः इन दोनों में क्रान्तिक अनुपात 1.11 पाया गया प्राप्त क्रान्तिक अनुपात 0.05 स्तर के मान 1.96 से कम है इस आधार पर शून्य परिकल्पना को स्वीकृत करते हुये शोध परिकल्पना निरस्त की जाती है।

## शैक्षिक निहितार्थ

अध्ययन के परिणामों के आधार पर कहा जा सकता है कि विभिन्न वर्गों की बालिकाओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर सामान्य है, अतः समाज का उत्तरदायित्व है कि वह विद्यार्थियों के विशेषकर बालिकाओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर को बढ़ाने में उनकी सहायता करें, बालिकाओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर को बढ़ाने में निम्नलिखित उपाय किये जा सकते हैं–

- लक्ष्य निर्धारण के लिये सबसे आवश्यक है कि छात्राओं की क्षमता और रूचि का सही आंकलन किया जाये, कई बार माता–पिता अपनी पसंद बच्चे पर थोपने का प्रयास करते हैं लेकिन उसका परिणाम सही नहीं निकलता है, क्योंकि जब तक किसी भी क्षेत्र में कार्य करने की रूचि नहीं होगी तो कार्य का संपादन सही ढंग से हो ही नहीं सकता है । रूचि के साथ–साथ बच्चे के सामर्थ्य को भी ध्यान में रखना चाहिये इसके लिये अभिभावकों को अपनी बालिकाओं से खुलकर बातें करनी चाहिये और अध्यापकों को समय–समय पर उनका परीक्षण करते रहना चाहिये ।
- अध्यापकों को बालिकाओं के क्षमता के अनुरूप कठिन लक्ष्य अथवा विशिष्ट कठिन लक्ष्य के निर्धारण में उनकी सहायता करनी चाहिये, क्योंकि आसान लक्ष्य की तुलना में कठिन लक्ष्य के आने पर कार्य निष्पादन अधिक होता है ।
- अध्यापक को चाहिये कि वह बालिकाओं को लगातार प्रोत्साहित करता रहे जिससे उनका आकांक्षा स्तर बना रहे ।
- लक्ष्य निर्धारण की प्रक्रिया सफलीभूत होने के लिये पुनर्निवेश या प्रतिपुष्टि आवश्यक है, क्योकि इससे व्यक्ति अपने निष्पादन के लक्ष्य से तुलना कर पाता है।
- प्रोत्साहन तथा पुरस्कार से स्वतः लक्ष्य निर्धारण व्यवहार प्रभावित होता है प्रोत्साहित होता है जिससे उच्च लक्ष्य भी निर्धारित होता है और उससे उच्च लक्ष्य वचनबद्धता भी उत्पन्न होती है, अतः विद्यालय प्रशासन या अध्यापक बालिकाओं की सफलता पर उन्हें पुरस्कार प्रदान करके उनके आकांक्षा स्तर को बढ़ा सकते हैं ।
- अध्यापक बालिकाओं में कार्य के प्रति लगन व रूचि उत्पन्न करके उनकी आकांक्षा स्तर में दृढ़ता ला सकते हैं ।
- विद्यालय प्रशासन उचित भौतिक सुविधायें उपलब्ध कराकर बालिकाओं की आकांक्षा स्तर को बढ़ाने में मदद कर सकते हैं ।
- परिवार के सदस्यों एवं अध्यापको को चाहिये कि छात्राओं के असफल होने पर उन्हें हतोत्साहित न करें, बल्कि उन्हें प्रोत्साहित करें जिससे उनकी आकांक्षा स्तर में कोई परिवर्तन न होकर वह और उच्च हो सके ।
- विभिन्न प्रकार के नाटकों, कहानियों और वर्तमान की समस्याओं से परिचित कराकर उनकी सकारात्मक सोच को विकसित करके उनके लक्ष्य निर्धारण में सहायता की जा सकती है ।
- अध्यापकों तथा परिवार के सदस्यों द्वारा सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करके बालिकाओं के आकांक्षा स्तर को बढ़ाया जा सकता है, क्योंकि प्रेमपूर्ण व सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार से छात्राओं को आत्मसन्तुष्टि प्राप्त होती है और उनका आत्मविश्वास भी बढ़ता है। आत्मविश्वास ही उन्हें उनके लक्ष्य निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है ।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है बालिकाओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर को उनके वातावरण अर्थात परिवार और विद्यालय द्वारा उच्चतर श्रेणी में पहुँचाया जा सकता है ।

## भावी शोध हेतु सुझाव

प्रस्तुत अध्ययन में माध्यमिक स्तर की बालिकाओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर का अध्ययन किया गया है चूंकि यह अध्ययन मुख्यरूप से एक छोटे न्यादर्श एवं अल्पावधि में किया गया है । अतः इसके आधार पर दूरगामी प्रभाव अथवा व्यापक सामान्यीकरण की अपेक्षा नहीं की जा सकती है ।

प्रस्तुत शोध अध्ययन निम्नलिखित अन्य चरों पर भी किया जा सकता है–

- प्रस्तुत अध्ययन एक छोटे प्रतिदर्श पर किया गया है इस अध्ययन को और अधिक बड़े प्रतिदर्श पर किया जा सकता है।
- प्रस्तुत अध्ययन माध्यमिक स्तर की बालिकाओं पर किया गया है इस अध्ययन को अन्य स्तरों यथा प्राथमिक स्तर, उच्च प्राथमिक स्तर, उच्च माध्यमिक स्तर व कालेज स्तर की बालिकाओं पर भी किया जा सकता है।
- प्रस्तुत अध्ययन उत्तर प्रदेश माध्यमिक परिषद इलाहाबाद द्वारा मान्यता प्राप्त विद्यालयों पर किया गया है । इस अध्ययन को अन्य बोर्डों द्वारा संचालित विद्यालयों पर भी किया जा सकता है ।
- प्रस्तुत अध्ययन केवल बालिकाओं के प्रतिदर्श किया गया है । इस अध्ययन को बालकों तथा बालक एवं बालिकाओं दोनों के सम्मिलित प्रतिदर्श पर भी किया जा सकता है।
- प्रस्तुत अध्ययन किसी धर्म विशेष की बालिकाओं पर नही किया गया है, इस अध्ययन को किसी धर्म विशेष यथा हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, इसाई आदि बालिकाओं पर भी किया जा सकता है।
- प्रस्तुत अध्ययन सरकारी, गैर सरकारी विद्यालयों के सम्मिलित रूप में किया गया है इस अध्ययन को अलग–अलग भी किया जा सकता है ।

- प्रस्तुत अध्ययन केवल उत्तर प्रदेश के केवल रायबरेली जनपद में स्थित विद्यालयों का किया गया है, इस अध्ययन को कई जनपदों को सम्मिलित करके मण्डल स्तर पर, राज्य स्तर पर, कई राज्यों के सम्मिलित रूप में भी किया जा सकता है।
- प्रस्तुत अध्ययन ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यालयों के सम्मिलित रूप में किया गया है इस अध्ययन को ग्रामीण व शहरी अलग–अलग क्षेत्रों के विद्यालयों का भी किया जा सकता है।

# सन्दर्भ ग्रन्थ सूची


| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | कपिल, एच0के0 | अनुसंधान विधियाँ | पुस्तक प्रकाशक हरप्रसाद भार्गव 2/230 कचेहरी घाट, आगरा–4(2003) |
| 2. | गुप्ता, एस0पी0 | आधुनिक शिक्षा मनोविज्ञान | शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद। (1997) |
| 3. | गुप्ता, एस0पी0 एवं अलका गुप्ता | मापन एवं मूल्यांकन | शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद (2010) |
| 4. | गुप्ता, एस0पी0 एवं अलका गुप्ता | यवहारपरक विज्ञानों में सांख्यिकीय विधिया | शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद (2010) |
| 5. | परिहार, अमर जीत सिंह | परामर्श एवं निर्देशन, | आर0लाल बुक डिपो, मेरठ। (2010) |
| 6. | बुच, एम0बी0 | थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन वाल्यूम–प्प | एन0सी0ई0आर0टी0, नई दिल्ली;1977.82द्ध |
| 7. | बुच, एम0बी0 | फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन वाल्यूम–ट | एन0सी0ई0आर0टी0, नई दिल्ली, ;1983.88द्ध |
| 8. | बुच, एम0बी0 | फिफ्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन वाल्यूम–प्प | एन0सी0ई0आर0टी0, नई दिल्ली ;1988.92द्ध |
| 9. | भटनागर, आर0पी0 एवं मीनाक्षी | शिक्षा अनुसंधान | इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस मेरठ, (2010) |
| 10. | राय, पी0एन0 एवं पी0पी0राय | अनुसंधान परिचय | लक्ष्मीनारायण पब्लिशिंग हाउस, आगरा–3, (2010) |
| 11. | शुक्ल, एस0एम0 एवं शिवपूजन सहाय | सांख्यिकी के सिद्धांत | साहित्य भवन प्रकाशन, आगरा–2, (2000) |
| 12. | शर्मा, आर0ए0 | शिक्षा अनुसंधान | आर0लाल बुक डिपो, मेरठ, (2010) |
| 13. | सुखिया, एस0पी0 | शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व | विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–1, (1973) |
| 14. | सुलेमान, मोहम्मद | सांख्यिकी के मूल तत्व | शुक्ला बुक डिपो, पटना, (1997) |
| 15. | सिंह, कर्ण | शिक्षा सांख्यिकी | गोविंद प्रकाशन, लखीमपुर खीरी, (1992) |